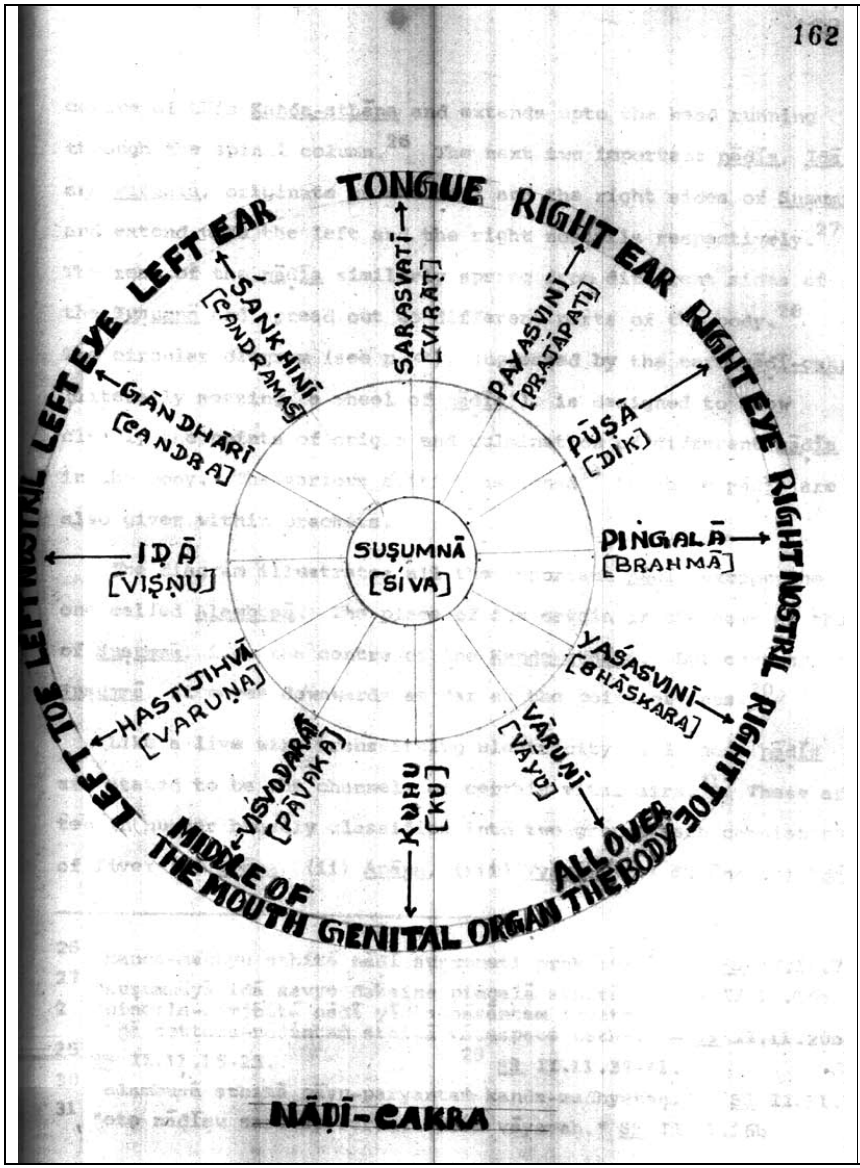

विभिन्न नाडियों के उद्भव और विकास को स्पष्ट करने में सहायक होगी, जिसमें प्रमुख नाडियों, उनके स्थानों एवं देवताओं का उल्लेख है।

नाडीचक्र

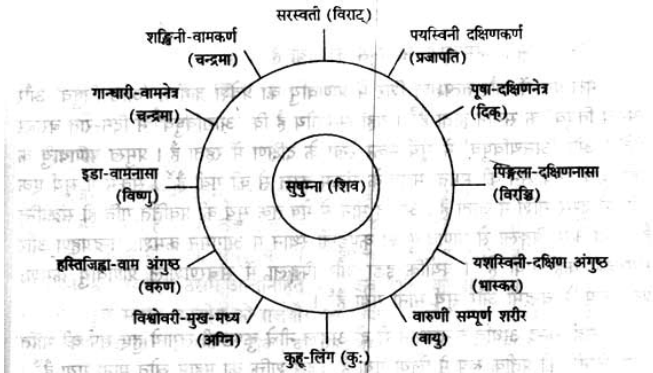

उपर्युक्त तालिका अलम्बुषा को छोड़कर शेष तेरह प्रमुख नाडियों को चित्रित करती है। अलम्बुषा का भी उद्भवस्थान सुषुम्ना की भाँति कन्दस्थान का मध्यभाग ही है, किन्तु यह सुषुम्ना के विपरीत गुदा तक नीचे की ओर जाती है[१]।

सभी नाडियों में संचरणशील प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान, नाग, कूर्म, कृकट, देवदत्त और धनञ्जय से दश वायु हैं[२]। शरीर के विभिन्न भागों में इनके निश्चित स्थान और कार्य हैं। दशों वायुओं में प्राण सर्वश्रेष्ठ है, जिसका स्थान मुख और नासिका के बीच में, नाभि के केन्द्र में और हृदय में बताया गया है[३]। टीकाकार के अनुसार प्रथम प्राणादि पाँच वायु शरीर के अन्तःकोश से तथा द्वितीय नागादि पाँच वायु वाह्यकोश से सम्बद्ध हैं[४]। प्राणादि नौ वायु देहस्थिति के कारण है, किन्तु दशम धनञ्जय लौकिक वायु है[५]।

१. 'अलम्बुषा स्थिता पायुपर्यन्तं कन्दमध्यतः।' —सू.सं., २/११/१९ व।
२. 'प्राणोऽपानस्तथा व्यानः समानोदान एव च।
नागः कूर्मश्च कृकटो देवदत्तो धनञ्जयः।
एते नाडीषु सर्वासु चरन्ति दश वायवः॥' —सू.सं., २/११/२५व-२६।
३. 'आस्यनासिकयोर्मध्ये नाभिमध्ये तथा हृदि।
प्राणसंज्ञोऽनिलो नित्यं वर्तते मुनिसत्तम॥' —सू.सं., २/११/२८।
४. 'नागादीनां वाह्यकोशवर्तित्वं प्राणादीनामन्तःकोशवर्तित्वं चोक्तमन्यत्र—
'एते प्राणादयः पञ्च मध्यकोशेषु संस्थिताः।
त्वगादिपञ्चकोशस्था नागाद्यावाह्यायवः॥ —सू.सं., २/११/३२, ता.टीका।
५. 'तत्राऽऽद्या नव देहस्थितिहेतवः। दशमो धनञ्जयस्तु लौकिकः।'
—सू.सं., २/११/२६ ता.टी.।